हिन्दी प्रतिभा, पार्ट I

संक्षिप्त परिचय :— हिन्दी साहित्य के इतिहास का

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन :—
अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न आधारों पर किन-किन प्रकार किया गया है।
डॉ० ग्रियर्सन ने 'द मॉडर्न वर्नेक्यूलर लिट्रेचर हिन्दुस्तान' में काल-विभाजन करने का प्र किया है। डॉ० ग्रियर्सन विदेशी थे, अ उन्होंने इस प्रकार काल विभाजन मंगलवार
प्रस्तुत किया है :—

(1) चारणकाल (सन् 700-1300 ई०)
(2) प्रन्द्रहवीं शताब्दी का धार्मिक पुनर्जा
(3) भक्तिकाल
(4) रीतिकाल
(5) आधुनिक काल

मिश्रबन्धुओं द्वारा किया गया काल

डॉ० ग्रियर्सन के
मिश्रबन्धुओं ने हिन्दी-साहित्य के
विभाजन का प्रयास किया। उ

अपने ग्रन्थ 'मिश्रबन्धु विनोद' में इस प्रकार विभाजन किया है।

(1) आरम्भिक काल — पूर्वारम्भिक काल – सं० 700-1343
उत्तरारम्भिक काल — सं० 1344-144[illegible]

(2) माध्यमिक काल :—
पूर्व माध्यमिक काल — सं० 1445 - 1560
प्रौढ़ माध्यमिक काल — सं० 1561 - 168[illegible]

(3) अलंकृत काल — पूर्वालंकृत काल — सं० 166[illegible]
उत्तरालंकृत काल —

सं० — 1791 — 1889

4. परिवर्तन काल — 1890 — 1925

5. वर्तमान काल — 1926 से अब तक।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा काल-

मिश्र बन्धुओं के [illegible]

आचार्य शुक्ल ने इस दिशा में प्र[illegible]
किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत किया
काल-विभाजन अधिक वैज्ञानिक, स्प[illegible]

अवैज्ञानिक और प्रामाणिक रहा।
विभाजन निम्नलिखित है :—
1. आदिकाल - वीरगाथा काल - सं० 1050-137
2. पूर्व-मध्यकाल — भक्तिकाल सं० 1317 से 17
3. उत्तर मध्यकाल — रीतिकाल सं० 1700 से 19
4. आधुनिक काल - गद्यकाल सं० 1900 से

डॉ० श्यामसुन्दर दास ने लगभग आचार्य शुक्ल के काल-विभाजन को स्वीकार किया है। अन्तर केवल इतना है।

रविवार

आचार्य शुक्ल ने वीरगाथा काल को 1050 से 1375 तक माना है जबकि श्यामसुन्दर दास ने 1050 से 1400 तक

डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपने विभाजन में नवीनता का समावेश करते हिन्दी-साहित्य को पाँच कालों में किया है :—

(1) संधिकाल — (सं० 750 से 1000 वि
(2) चारणकाल (सं० 1000 से 137
(3) भक्तिकाल - सं० 1375 से 170

4. रीतिकाल (सं० 1700 से 1900 वि०)
5. आधुनिक काल (सं० 1900 से अद्यतन)

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत काल विभाजन
— (1) हिन्दी साहित्य का आदिकाल — (10 वीं से 14 वीं शती)
(2) भक्तिकाल — (14 वीं शती से 16 वीं शती तक)
(3) रीतिकाल — (16 वीं शती से मध्यभाग से 19 वीं शती के मध्यभाग तक)
(4) आधुनिक काल — (19 वीं शती के मध्य से आज तक)

डॉ० नगेन्द्र द्वारा प्रस्तुत काल विभाजन

डॉ० नगेन्द्र ने समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपना
तथा ऐतिहासिक कालक्रम व साहित्यिक विचा
दोनों का आधार ग्रहण करते हुए हिन्दी-
का काल-विभाजन इस प्रकार प्रस्तुत किया
1. आदिकाल — सन् 650 से 1350 ई०
2. भक्तिकाल — सन् 1350 से 1650 ई०
(3) रीतिकाल — सन् 1650 से 1850 ई०
(4) आधुनिक काल — 1850 से अब तक।

आदर्श काल विभाजन

विभिन्न विद्वानों के मतों का अवलोकन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हिन्दी-साहित्य के काल-विभाजन के संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है। अबतक की प्राप्त सामग्री के आधार पर कहा जा सकता है कि 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल', 'डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी', 'डॉ नगेन्द्र' का काल विभाजन अधिक स्पष्ट, वैज्ञानिक और सुव्यवस्थित रहा है। इन तीनों के समन्वयात्मक रूप को ही हमें स्वीकार करना चाहिए। अतः हिन्दी-साहित्य के इतिहास को निम्नांकित चार भागों में विभाजित किया जा सकता है— सोमवार 24

(क) आदिकाल (वीरगाथा काल) - संo 1050 से 137
(ख) भक्तिकाल — संo 1375 से 1700 त
(ग) रीतिकाल — संo 1700 से 1900 त
(घ) आधुनिक काल — संo 1900 से अब